की संख्या को लेना अधिक उपयुक्त है। प्राप्त हुई सूचना के अनुसार राज्य में फरवरी, 1972 के अन्त तक 19 लाख श्रमदिनों का रोजगार उपलब्ध किया गया था।

जबलपुर कृषि विश्वविद्यालय को केन्द्रीय सहायता

2391. **श्री गंगाचरण दीक्षित** : क्या कृषि मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) विश्व बैंक से मांगे हुए ऋणों में से मध्य प्रदेश के जबलपुर कृषि विश्वविद्यालय को कितना ऋण दिया गया है ; और

(ख) विश्वविद्यालय के लिए सरकार से अन्य कौन सी सुविधायें मांगी गयी हैं ?

कृषि मन्त्रालय में राज्य मन्त्री (श्री अण्णासाहिब पी० शिन्दे) : (क) जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, जबलपुर को प्रत्याशित विश्व बैंक सहायता से कोई ऋण नहीं दिया गया है। इस विश्वविद्यालय को ऐसी सहायता देने के प्रश्न पर ही विचार नहीं किया गया।

(ख) देश मे कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना और विकास के लिये स्वीकृत केन्द्रीय वित्तीय सहायता के प्रोग्राम के अनुसार, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् इस विश्वविद्यालय को व्यय की अनुमोदित मदों पर, शत प्रतिशत केन्द्रीय सहायता प्रदान कर रही है। वर्ष 1969-70 से वर्ष 1971-72 की अवधि के दौरान अनुदान की कुल 1,28,94,795.00 रुपये की राशि नियुक्त की गई।

मध्य प्रदेश में द्रुत कार्यक्रम के कार्यकरण सम्बन्धी रिपोर्ट

2392. **श्री गंगाचरण दीक्षित** : क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार जुटाने के लिए द्रुत कार्यक्रम के कार्यकरण में मध्य प्रदेश सरकार की सहायतार्थ भोपाल में किसी केन्द्रीय सरकारी अधिकारी को नियुक्त किया गया है ; और

(ख) यदि हां, तो क्या उस अधिकारी द्वारा केन्द्रीय सरकार को समय-समय पर कोई रिपोर्ट भेजी जा रही है ?

कृषि मंत्रालय में राज्य मन्त्री (प्रो० शेर सिंह) : (क) जी नहीं।

(ख) प्रश्न नहीं उठता।

Bombay-Konkan-Goa Road as a National Highway

2393. SHRI SHANKARRAO SAVANT : Will the Minister of SHIPPING AND TRANSPORT be pleased to state :

(a) whether the Bombay-Konkan-Goa Road has been declared as a National Highway ;

(b) if so, when ; and

(c) the financial assistance the Central Government will give for this road after upgrading it as a National Highway ?

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI RAJ BAHADUR) : (a) Yes, Sir.

(b) 8-3-1972.

(c) Consequent on the declaration of the road as a National Highway, the entire cost of its development to National Highway Standard and maintenance will be borne by the Central Government.

Financial Assistance for Development of Ports in Maharashtra

2394. SHRI SHANKERRAO SAVANT : Will the Minister of SHIPPING AND TRANSPORT be pleased to state :

(a) which ports in Maharashtra are being developed with the help of financial assistance from the Centre ; and

(b) what is the extent of the assistance given and of the assistance promised ?

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI RAJ BAHADUR) : (a) The minor port of Miryabay in Maharashtra State is included in the Centrally Sponsored Schemes for the grant of loan assistance for developmental purposes.

(b) A loan assistance of Rs. 74 lakhs has so far been released against an outlay of Rs. 107 lakhs provided for this scheme under the Centrally Sponsored Schemes included in the Fourth Plan for the development of minor ports and, based on the progress of the scheme, the remaining Rs. 33 lakhs will be released during the remaining two years of the Plan period.

केन्द्रीय चारा अनुसंधान संस्थान झांसी द्वारा किया गया अनुसंधान कार्य

2395. **डा० गोविन्द दास रिछारिया** : क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) झांसी स्थिति केन्द्रीय चारा अनुसंधान संस्थान ने अपने कार्य क्षेत्र में अभी तक क्या-क्या मुख्य वैज्ञानिक खोजें और परीक्षण किए हैं ; और

(ख) इन खोजों, एवं परीक्षणों के परिणामों को सामान्य किसानों के लाभ के लिए उन तक पहुंचाने हेतु क्या कार्यवाही की गई है ?

कृषि मन्त्रालय में राज्य मन्त्री (प्रो० शेर सिंह) : (क) भारतीय चरागाह तथा चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी में वनस्पति सुधार, मृदा विज्ञान तथा शस्य-विज्ञान, चरागाह व्यवस्था, वनस्पति पशु सम्बन्ध, खरपतवार पारस्मिति की तथा नियंत्रण से सम्बन्धित 5 प्रभाग और फार्म, कृषि इंजीनियरिंग, सांख्यिकी तथा पुस्तकालय से सम्बन्धित 4 अनुभाग हैं। यह संस्थान अधिकतम उत्पादन प्राप्त करने के सम्बन्ध में अधिक उत्पादनशील किस्मों तथा खेती की पद्धतियों के विकास के लिये, चारे की फसलों की विभिन्न किस्मों पर और घासों पर, आधारिक तथा व्यवहारिक अनुसंधान करता हैं।

वनस्पति सुधार प्रभाग में, ऐसी दो आशाजनक लसुन घास का पता लगाया है, जोकि अपनी प्रत्येक कटाई के बाद अधिक बढ़ती है और अधिक बीजों को लगाने की क्षमता रखती है। ये किस्में किसी भी कटाई में 880 कि०/हैं० तक उपज देती हैं। लोबिया की दो आशाजनक किस्मों का, जिनकी एक बार या दो बार की कटाई पर क्रमश: 323 तथा 363 कि०/है० हरे चारे की उपज की क्षमता है, पता लगाया गया है। इन किस्मों का, जिनमें सूखे तोल के आधार पर 25 प्रतिशत तक प्रोटीन है, अधिक उत्पादनशील पोसक किस्मों के विकास के लिये संकरण कार्यक्रम में उपयोग किया जा रहा है। एक कटाई तथा बहुत कटाई के लिये ज्वार में दो आशाजनक किस्में निकाली गयी हैं। हरे चारे का अधिक उत्पादन देने के अतिरिक्त, ये किस्में कम एच० सी० एन० तत्व वाली मीठी पाई गई। अन्य घासों में 1227 कि०/है० तक की हरे चारे की उपज देने वाली पेनिसेटम पेडीसेलेटम में से दो आशाजनक किस्में निकाली गयी हैं। जो ज्वार की आशाजनक प्रतिपूरक समझी जाती हैं। अब इनकी अनुकूलता तथा सस्य सम्बन्धी स्थिरता के निर्धारण के सम्बन्ध में, देश की विभिन्न कृषि जलवायु की परिस्थितियों के अन्तर्गत, बड़े पैमाने पर स्थानीय बहु-परीक्षणों के लिए इन पदार्थों को पर्याप्त रूप से बढ़ाया जा रहा है।

मृदा विज्ञान तथा सस्य विज्ञान प्रभाग में, उर्वरक उपयोग, मृदा जल प्रबन्ध, खेती की पद्धति तथा चारा तथा बीज उत्पादन दोनों के सूक्ष्म-पोसक अध्ययनों में विकासशील आधुनिक सस्य विज्ञान सम्बन्धी पद्धतियों पर अनुसंधानों कार्य किया गया है। वर्तमान खेती के प्रतिमानों में चारे की फसलों के सम्भाव्यता तथा मितव्यता के सम्बन्ध में भी अध्ययन किया जा रहा है।